लवणीय मृदा मे सफेद मूसली की खेती – लाभ मे बेमिसाल

मोती लाल मीणा, धीरज सिंह एवं पी.के. तोमर

कृषि विज्ञान केन्द्र (काजरी), पाली–मारवाड़ 306401 (राज.)

सफेद मूसली को विभिन्न भाषाओं में भिन्न–भिन्न नाम से जाना जाता है। एक अनुमान के अनुसार विश्वभर में सफेद मूसली की मांग 35,000 टन प्रति वर्ष है, जबकि उत्पादन या उपलब्धता मात्र 5000 टन ही है। एक–डेढ़ फीट ऊँचाई के इस पादप की जड़ें औषधीय महत्व की हैं। व्यावसायिक रुप में इसकी खेती से आर्थिक प्रगति के साथ इसे लुप्त होने से भी बचाया जा सकता है। सफेद मूसली की फसल मात्र 6 से 8 माह में प्रति एकड़ दो से तीन लाख रुपये का लाभ दे सकती है। विधिवत रुप से सुखाई हुई मूसली की वर्तमान बाजार दर 1000–1200 रुपये प्रति कि.ग्रा. है।

सफेद मूसली की कई प्रजातियाँ पाई जाती है। जैसे– *क्लेरीफाइटम, बोरिक्लिनम, क्लोरोफाइटम, क्लोरीफाइटम एंटेनुएटम, ब्रीविस्केपम* आदि। इसकी खेती हेतु उत्तर प्रदेश, बिहार, उड़ीसा, हरियाणा, दिल्ली एवं राजस्थान में पर्याप्त वर्षा वाले क्षेत्रों की जलवायु अनुकूल है। सफेद मूसली मूलतः कंद है जो देश के जंगलों में प्राकृतिक रुप में उगता है। परन्तु नवीनतम् कृषि तकनीक का प्रयोग कर अच्छी एवं अधिक मात्रा में फसल प्राप्त की जा सकती है। सफेद मूसली की जड़ें औषधीय महत्व की हैं।

अतः इसकी खेती हेतु जमीन थोड़ी नर्म होनी चाहिए जिससे जड़ें अधिक विकसित हो सकें। अच्छी जल निकासी वाली रेतीली व लवणीय मिट्टी जिसमें जीवाश्म की पर्याप्त मात्रा हो, इसकी खेती के लिए सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है। ज्यादा नर्म मिट्टी होने पर कंद पतली रह जाती है तथा ज्यादा पोली जमीन अनुपयुक्त होती है। इसकी खेती हेतु पानी की काफी आवश्यकता होती है। इसे साधारणतः जून माह में लगाया जाता है तथा जून–जुलाई–अगस्त महीनों में प्राकृतिक वर्षा होती रहती है, परन्तु यदि वर्षा न हो तो 10 दिन के बाद खेत में पानी देना उपयुक्त रहता है। पौधे के पत्ते सूखकर झड़ने के बाद भी हल्की सिंचाई करनी चाहिए जिससे जड़ों का उचित विकास हो सके।

खाद :

सफेद मूसली की खेती हेतु गोबर, रासायनिक, हरी खाद, हड्डी खाद या मृदा कंडीश्नर आदि का प्रयोग किया जा सकता है। गोबर की अच्छी पकी हुई खाद 5 से 10 ट्रोली प्रति एकड़ उपयुक्त रहती है। अच्छी पकी हरी खाद हेतु जनवरी–फरवरी में मूसली के कंद की खेती वाले स्थानों पर अल्पावधि वाली फसलें जैसे सन्, ग्वारपाठा, मेहंदी या धतूरा उगाते हैं तथा मई–जून में सफेद मूसली हेतु खेत तैयार करते समय इसे हल चलाकर खेत में ही मिला कर हरी खाद प्राप्त कर सकते हैं।

सफेद मूसली की खेती हेतु गहरी जुताई कर 3 से 3.5 फीट चौड़े एवं 6 इंच से 1. 5 फीट तक ऊँचे मेढ़ बना लेते हैं जिनमें पानी के उचित निकास हेतु नालियों की व्यवस्था हो। मूसली की बीजाई इसके धनकंदो या ट्यूबर्स से की जाती है। इस हेतु कंद के साथ पौधे के ऊपरी भाग का कुछ भाग होना आवश्यक है। मूसली के पौधों की खेती बीजों से करने में समय अधिक लगता है तथा उच्च गुणवत्ता के पौधे तैयार नहीं हो पाते, अतः सीधे ही पौधे के ऊपरी भाग सहित कंदों/फिंगर्स से बीजाई करना श्रेष्ठ रहता है।

कंदो को लगाने से पूर्व 2 मिनट तक बेविस्टीन के घोल में डूबोकर रखा जाता है जिससे पौधे रोगमुक्त रहें। बीजाई के कुछ दिन बाद ही पौधे में पत्ते आने लगते हैं तथा फिर फूल एवं बीज आते हैं। अक्टुबर–नवम्बर माह में पत्ते अपने आप सूखकर गिर जाते हैं तथा पौधे के कंद जमीन में रह जाते हैं। पौधों के पत्ते सूख जाने पर (बीजाई के लगभग तीन माह बाद) फसल तैयार हो जाती है परन्तु पत्तों के सूखकर गिरने के एक दो माह बाद अर्थात् बीजाई के करीब 5 माह बाद कन्दों का सफेद रंग गहरा भूरा हो जाए तब निकाल लेते हैं। इस प्रकार जनवरी माह में हाथों से सभी कंदो को निकाल कर उनको धोया जाता है तत्पश्चात इनकी छिलाई की जाती है। जिन कंदो को बुवाई हेतु काम में लेना हो, उन्हे शीर्ष (क्राउन भाग) सहित बिना छिलाई किए रख देते हैं। इस प्रकार छिली हुई मूसली को 2–3 दिन तक धूप में खुला रख कर सूखा लेते है तथा बाद में इसकी पैकिंग कर देते है।

सफेद मूसली की गुणवत्ता हेतु जो मूसली छिलने एंव सूखने पर पूर्ण सफेद रहे तथा जिसमें किसी प्रकार के काले/भूरे धब्बे न हों उचित होती है।

आर्थिक लाभ :

सफेद मूसली के एक हैक्टर में 75,000 पौधे लगाए जाते हैं जिनमें से 70,000 पौधे बच सकते हैं। इसकी खेती हेतु बुवाई कंदो की लागत ही मुख्य खर्च है तथा प्रति हैक्टऱ यह व्यय लगभग एक लाख रुपये तक आता है। इसके बुवाई कंद 300–350 रुपए प्रति कि.ग्रा. की दर से मिलते हैं। इस प्रकार 3 से 5 क्विंटल प्रति हैक्टर बुवाई कंद की कीमत एक लाख रुपए तक आती है। इसके अतिरिक्त मूसली छीलने एवं सूखाने पर खर्च 50 रुपए प्रति कि.ग्रा. की दर से 400 कि.ग्रा. हेतु 20,000 रुपए आता है। सूखी हुई 4 क्विंटल मूसली से 1000 रुपए प्रति कि.ग्रा. की दर से 4 लाख रुपए तथा कंद रुप में लगभग 50,000 रुपए प्राप्त किए जा सकते है। इस प्रकार कुल लाभ प्रति हैक्टर 2–3 लाख रुपए तक मात्र 6 से 9 माह की फसल से प्राप्त किया जा सकता है।

सफेद मूसली का पौधा

सफेद मूसली कंद